३ III-1

भूमिका

:: भूमिका ::

भारतीय समाज व्यवस्था में जीते समय किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को यहाँ कि विषम समाज-व्यवस्था का बड़ा एहसास तीव्रता के साथ होने लगता है। विशेषतः नयी मूल्य व्यवस्था और मानवीय दृष्टि के कारण इस विषम समाज-व्यवस्था के प्रति एक चीढ़ पैदा होती है। व्यक्तिगत रूप से जाति और वर्ण की विसंगति को मैं महसूस कर रहा था। जाति एवं वर्ण के कारण होनेवाली यह उपेक्षा वर्तमान युग की उपज है या प्राचीनकाल में भी यह उपेक्षा थी? ऐसी जिज्ञासा मेरे मन में उठती रही। आगे चलकर कर्णचरित के संबंधित मराठी उपन्यास एवं नाटकों को पढ़ते समय इस जिज्ञासा का क्षमन होने लगा। कर्ण चरित संबंधित दो- एक रचना पढ़ने के बाद मुझ में और कई प्रश्न पैदा हुए। महर्षि व्यास के महाभारत में कर्णचरित किस रूप में आया है और उसका परिवर्तन और परिवर्धन किस रूप में हुआ है। जानने की जिज्ञासा तीव्र होती गयी। मैं और मेरे मित्र प्रा.आचमारे देगलूर महाविद्यालय, से मिला। उनसे चर्चा करने के बाद कर्ण चरित पर एक शोध प्रबंध लिखने की जिज्ञासा हुई।

मैं व्यवसाय से वकिल हूँ। शिक्षा-क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को जो सुविधाएँ और समय सहज संभव है वह मेरे लिए दुष्प्राप्य था। बावजूद इसके काम करने की जिद्द थी। इसी जिद्द के कारण मैंने यह काम शुरू किया। मुझे डॉ.चंद्रभानु सोनवणेजी (प्रपाठक, हिन्दी विभाग, मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद) का अमूल्य मार्गदर्शन मिला। डॉ.चन्द्रभानु सोनवणे जी ने कहा कि " भांडारकर संशोधन केन्द्र, पुणे व्दारा प्रकाशित 'महाभारत' के समस्त खंडों में बिखरे कर्ण चरित विषयक श्लोकों को इकठ्ठे किए बिना इस काम के प्रति न्याय नहीं हो सकता" अपने व्यवसाय से समय निकालकर मैं इन खंडों से निरन्तर जूझता रहा।

प्रबंध के अध्याय क्रमांक-एक में इन ग्रंथों में चित्रित कर्णचरित का विवेचन किया गया है। यह अध्याय इस प्रबंध की नींव है।

द्वितीय अध्याय में संस्कृत साहित्य में चित्रित कर्ण का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय में 10 वी सदी से लेकर 19 वी सदी तक के हिन्दी मराठी साहित्य में चित्रित कर्ण का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में आधुनिक हिन्दी-मराठी साहित्य में चित्रित कर्ण-परिवर्तन एवं परिवर्धन के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह प्रकरण अधिक विस्तृत एवं बृहदाकार है।

पंचम अध्याय में सम्पूर्ण अध्ययन का मूल्यांकन और निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक प्रकरण और विधा के अन्त में कर्णचरित का परिवर्तन एवं परिवर्धन संबधी निष्कर्ष एवं हिन्दी -मराठी साहित्य में चित्रित कर्ण चरित की तुलना प्रस्तुत की गयी है।

पीछले चार वर्षों से अपने व्यवसाय के बाद मैं कर्णचरित में पूर्णत: डूब चुका था। इस काल में मुझे अनेक व्यक्तियों, संस्था एवं ग्रंथालय से सहायता मिलती गयी, इनमें अॅडव्होकेट मनोहरराव तमलूरकर, देगलूर, प्रा.खुशाल आवमारे, देगलूर महा-विद्यालय, देगलूर, श्री पांडुरंग अडसूल, ग्रंथापाल, शिव-छत्रपति नगर परिषद ग्रंथालय, लातूर, श्री विश्वंभर जोगदंड, चन्द्रकान्त पुरोहित का विशेष आभारी हूं।

डॉ.चंद्रभानु सोनवणे जी ने प्रबंध के प्रथम प्रकरण हेतु मेरी अत्याधिक सहायता की है। वे संस्कृत विद्वान एवं मैं संस्कृत से अनभिज्ञ उनकी सहायता से मैं प्रथम अध्याय पूर्ण कर सका।

प्रस्तुत प्रबंध को मूर्त स्वरूप प्रदान करने के लिए प्रबंध के निर्देशक डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे जी ने जो अनमोल मार्गदर्शन किया है, उसे भूलपाना असंभव है।

मैं ऐसे शब्दों के चयन करने में असमर्थ पा रहा हूं, जिन शब्दों में उनके प्रति आभार प्रदर्शित कर सकूं। अतः मैं हृदय से उनका आभारी हूं।

मराठवाडा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के श्री अनिल कोठारकर का भी भी आभारी हूं, जिन्होंने इस प्रबंध का टंकण कार्य किया।

अन्त में जिन व्यक्तियों ने मेरी इस प्रबंध को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहायता की उनके प्रति आभार प्रकट करना कैसे भूलूं?

तिथि : १

– सुभाष स्वामी.

* * *